This is the subtitle of PDF, Use long text here.

डा. सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
स्नातक डिग्री२,पत्र-३

महादेवी का दुखवाद

प्र०2:- महादेवी वर्मा के दुखवाद से क्या समझते हैं? क्या इस पर बुद्ध की छाया है?

वेदना के दो प्रमुख पक्ष हैं - दुख और आँसू। दुख वेदना का अनुभूति पक्ष है और आँसू उसका कलात्मक परिणाम। महादेवी वर्मा में आँसुओं की अविरल धारा है, तो दुख की भरी कहानी भी। महादेवी के अश्रुभीगे गीत भले ही कलात्मक हो, किन्तु उनके आँसू सर्वथा अविश्वनीय नहीं हैं। इन आँसुओं ने महादेवी को छायावादी वेदना की साम्राज्ञी का पद दिया है। संस्कृत साहित्य में भवभूति ने करुणा को सिद्धांत एवं व्यवहार में सर्वाधिक महत्त्व दिया है। करुणा रस के क्षेत्र में इनकी समानता करनेवाला अन्य नहीं है। इसी तरह म० की वेदना करुणा की तुलना दूसरे से नहीं की जा सकती है। महादेवी की वेदना एवं करुणा पर बौद्ध धर्म की वेदना दुखवाद का पुष्कल प्रभाव है। म० ने बौद्ध दर्शन की इस बहुविचारित करुणा के सामान्य स्वरूप को स्पष्ट करते हुए - "बुद्ध होने का प्रयत्न करने वाला बोधिसत्व है और बोधिसत्व के लिए दो गुण आवश्यक होते हैं - महा मैत्री और महाकरुणा। महामै० उसे अन्य प्राणियों के लाभ के लिए अपना सर्वस्व त्यागने की शक्ति देती है और महाकरुणा के कारण वह सबको दुख से विमुक्त करने के लिए प्रयत्नशील करता है।"

महादेवी का मानना है कि बुद्ध का मनुष्य समष्टि का मनुष्य है और उसका निर्वाण सबकी दुख मुक्ति में अपनी दुखमुक्ति है। दीपशिखा के अनेक स्थलों में करुणा के प्रति लालसा भरी ललक है - तारों से प्यारे, जो विषाद से श्यामल, अपनी चितवन कौन इन्हें कर।

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

2.

फिर उनसे उधार लेकर एकाकी करुणा की, कोई यों जाता लोक आखिर था जाता।
बौद्ध दर्शन अहंकार को भी दुख का कारण मानता है कि — "दुख कामना और कामना अहंकार से उत्पन्न होता है" इसलिए अहंकार से मुक्त मनुष्य ही महाभैत्री कर सकता है।" कुछ गीतों में इनका दुखवाद जागतिक दृष्टि से इतना सामान्य हो जाता है कि ये दुख-सुख के समन्वय सिद्धांत में विश्वास करने लगती हैं।

— सब आँखों के आँसू उजले
सबके " में सत्य पला।
जिसने उसको ज्वाला सौंपी, उसने इसमें मकरंद भर
देता इस पर यह सौरभ बिखरा।

इन पंक्तियों में कवयित्री ने सुख-दुख को एक ही आगम सत्य के दो पहलू के रूप में स्वीकार। इसलिए दुख इनके समक्ष पशुओं को भड़काने वाला काष्ठकौशिक बनकर नहीं आ जाता — — पथ रहने दो अपरिचित - - -
यह अनन्तता बाँधते पद - - - स्वर्णबेला।

महादेवी का कथन है कि दुख ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता रखता है। हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सकें, किन्तु एक बूंद आँसू अधिक महत्वपूर्ण आर्थिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता। दुखवाद से संबद्ध महादेवी की कविताओं में 'मैं नीर भरी दुख की बदली' की अंतिम पंक्तियाँ मार्मिक हैं —— विस्तृत नभ का कोना - - उमड़ी कल थी मिट आज चली